नानाजी देशमुख

चित्रावली

100 जन्म शताब्दी वर्ष

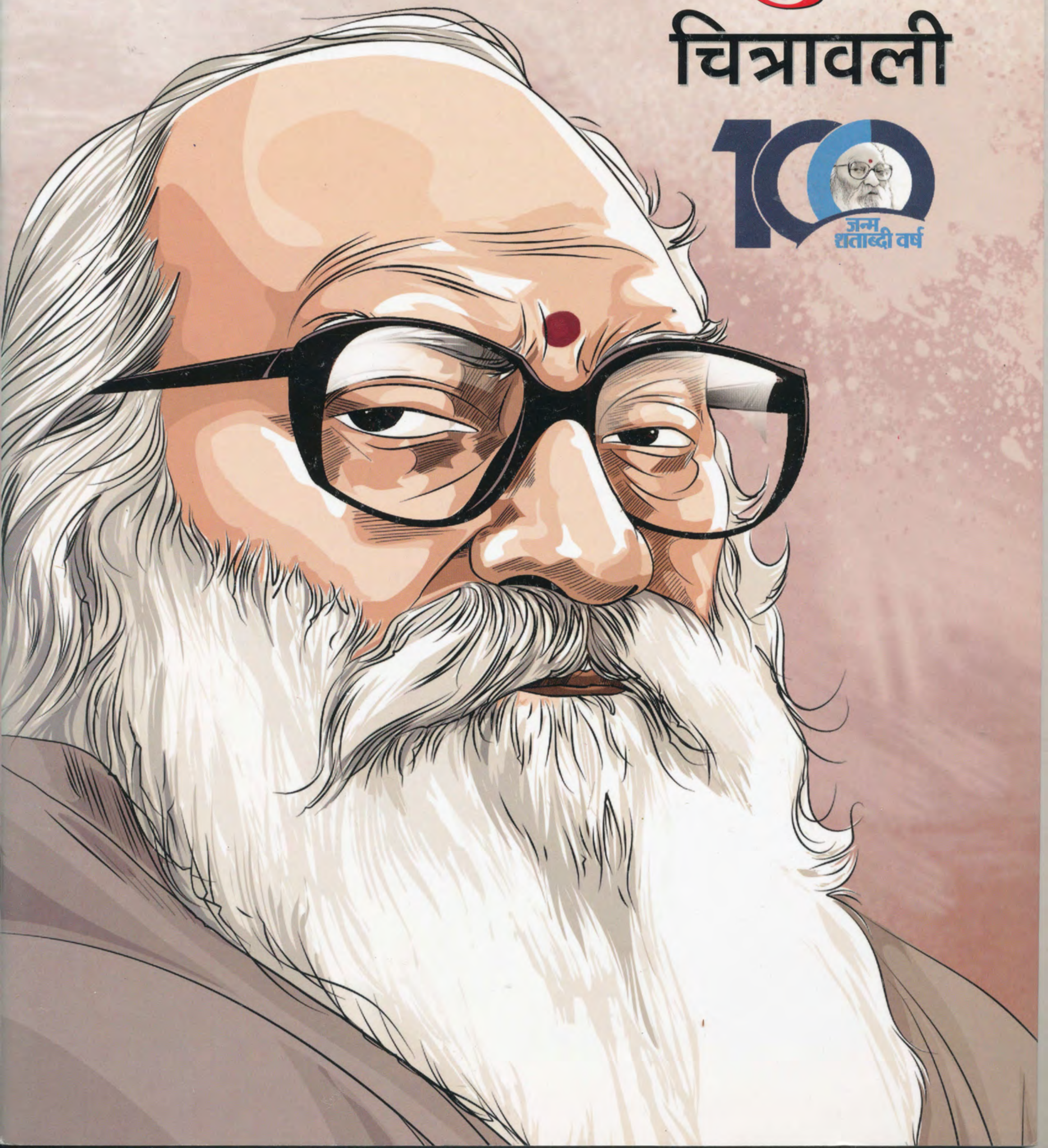

नानाजी देशमुख

11 अक्तूबर, 1916 की शरद पूर्णिमा को महाराष्ट्र के मराठवाड़ा क्षेत्र के परभणी जिले के हिंगोली तालुका के कडोली गाँव में अमृतराव देशमुख की धर्मपत्नी राजाबाई की कोख से एक पुत्र ने जन्म लिया। शिशुकाल में ही नाना माता-पिता की स्नेहछाया से वंचित हो गए। नाना के पालन-पोषण का भार बड़े भाई आबाजी देशमुख पर आ पड़ा। नौ वर्ष की आयु तक नानाजी 'क ख ग' भी नहीं पढ़ पाए, पर विधाता ने उन्हें कुशाग्र बुद्धि दी थी, जिसके बल पर वे बड़ी बहन के पास रिसोड़ में आठवीं कक्षा तक प्रत्येक कक्षा में प्रथम स्थान पाते रहे। रिसोड़ में ही नानाजी का संबंध राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से स्थापित हुआ। नियति उनकी जीवन की दिशा तय करने लगी। मैट्रिक तक की पढ़ाई के लिए उन्हें वाशिम आना पड़ा, वहीं 1934 में डॉक्टरजी ने 17 स्वयंसेवकों को संघ की प्रतिज्ञा दी। 1939 में राजस्थान के पिलानी बिड़ला कॉलेज में अध्ययन के लिए गए।

वर्ष 1940 में वे संघ की प्रथम वर्ष शिक्षा के लिए नागपुर गए। वहाँ उन्होंने डॉ. हेडगेवार को असाध्य बीमारी से जूझते देखा। उनके अंतिम भाषण को सुना। उन्होंने पढ़ाई को बीच में ही छोड़कर संघ का पूर्णकालिक कार्यकर्ता बनने का निश्चय कर लिया। 15 अगस्त, 1940 को केवल 14 रुपए जेब में लेकर गोरखपुर के लिए रवाना हो गए। कुछ दिन धर्मशाला में काटे। अपनी व्यवहार कुशलता से एक ओर उन्होंने महंत दिग्विजय नाथ, गीता प्रेस के संस्थापक भाई हनुमान प्रसाद पोद्दार, कांग्रेसी नेता बाबा राघवदास जैसे प्रतिष्ठित और बड़े लोगों से संपर्क बनाया। 12 जुलाई, 1949 को संघ पर से प्रतिबंध उठने पर नानाजी ने 'स्वदेश' पुन: प्रकाशित कराने की तैयारी शुरू कर दी। जनसंघ में 1951 से 1961 तक नानाजी का कार्यक्षेत्र उत्तर प्रदेश रहा। दीनदयाल जी की स्मृति में 'दीनदयाल शोध संस्थान' की स्थापना की। जनता पार्टी के विघटन और जे.पी. के निधन से व्यथित नानाजी ने दल और वोट की सत्ता-राजनीति से पूरी तरह मुँह मोड़ लिया। अद्‌भुत कल्पनाशक्ति, संगठन-कुशलता व योजकता और साधन-संग्रहक की पूंजी लेकर वे रचनात्मक क्षेत्र में कूद पड़े।

94 वर्ष लंबे जीवन काल में राष्ट्र-जीवन के अनेक क्षेत्रों में अपने कर्तृत्व का डंका बजाया। दक्षिण में बीड से उत्तर में गोंडा जिले तक विकास के अनेक रचनात्मक प्रकल्पों की शृंखला खड़ी की, किंतु उनमें कहीं पर भी नानाजी का नाम नहीं है, नानाजी का चित्र नहीं है, हर जगह उन्हीं के चित्र और नाम हैं, जिनसे उन्होंने जीवन में कभी भी प्रेरणा पाई। डॉ. हेडगेवार, गोलवलकर 'गुरुजी', दीनदयाल उपाध्याय, जयप्रकाशजी और प्रभावतीजी आदि-आदि। 27 फरवरी 2010 को अपनी कर्मभूमि चित्रकूट में चतुष्पुरुषार्थ का यह जीवंत मॉडल इस संसार से महाप्रयाण कर गया और उनकी वसीयत के मुताबिक उनकी देह दिल्ली के एम्स में समर्पित कर दी गई।

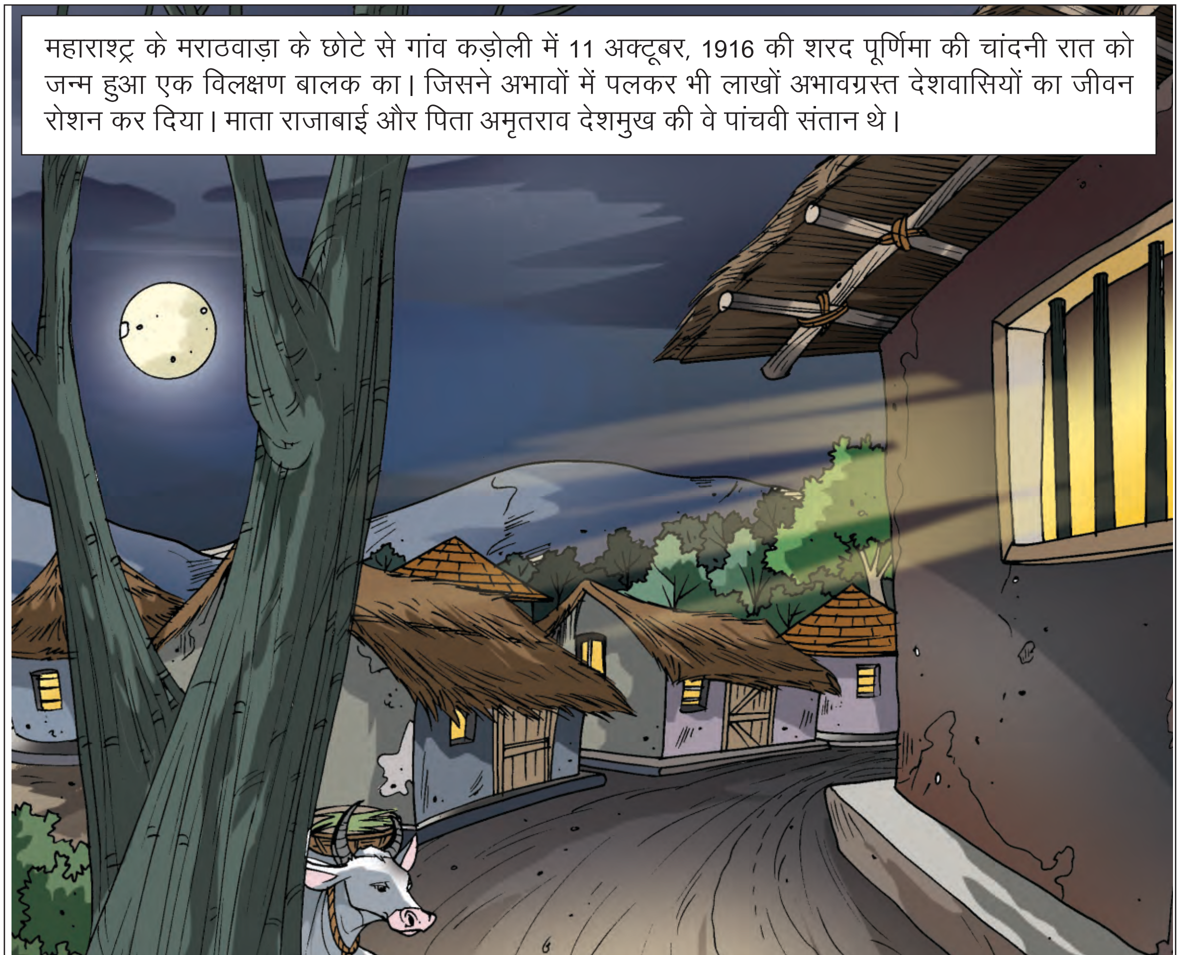
महाराष्ट्र के मराठवाड़ा के छोटे से गांव कड़ोली में 11 अक्टूबर, 1916 की शरद पूर्णिमा की चांदनी रात को जन्म हुआ एक विलक्षण बालक का। जिसने अभावों में पलकर भी लाखों अभावग्रस्त देशवासियों का जीवन रोशन कर दिया। माता राजाबाई और पिता अमृतराव देशमुख की वे पांचवी संतान थे।

बालक का नाम चंडिकादास अमृतराव होगा। प्यार से इसे नाना बुलायेंगे। हमारी मान, प्रतिश्ठा और प्रभाव को बढ़ाएगा, कुल का नाम रोशन करेगा। इसे देखकर लगता है कि वह एक आदर्श जीवन स्थापित करेगा। हमारी तरह ही दूसरों की सहायता करने वाला विशाल ह्रदय रखेगा।
दिल बड़ा होने से क्या होता है। हमारे पास परिवार का भरण पोशण और शिक्षा के लिए पर्याप्त आर्थिक साधन नहीं हैं। हम इस बालक को कैसे शिक्षित करेंगे? नाना दो वर्श के ही हुए थे।

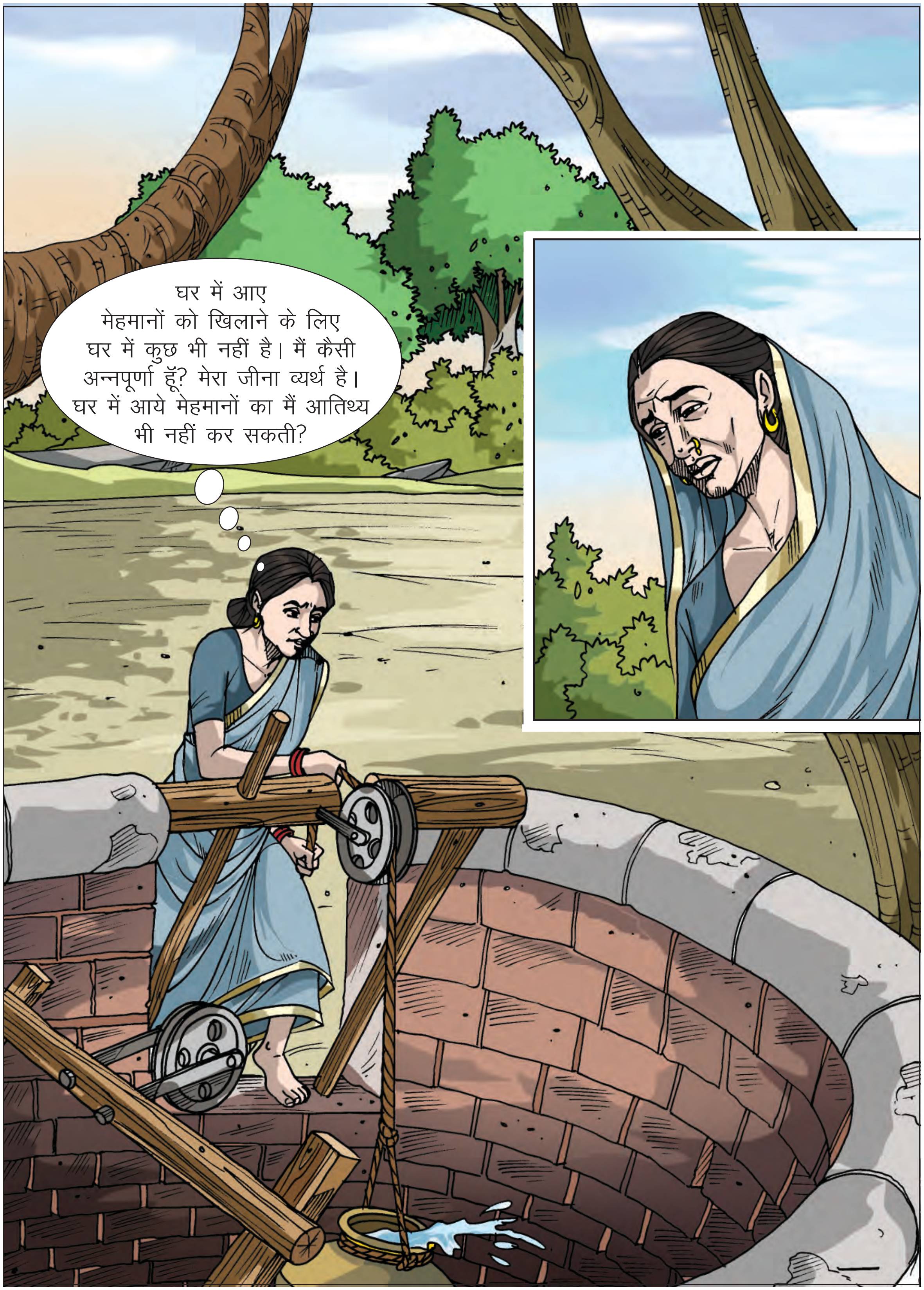
घर में आए मेहमानों को खिलाने के लिए घर में कुछ भी नहीं है। मैं कैसी अन्नपूर्णा हूँ? मेरा जीना व्यर्थ है। घर में आये मेहमानों का मैं आतिथ्य भी नहीं कर सकती?

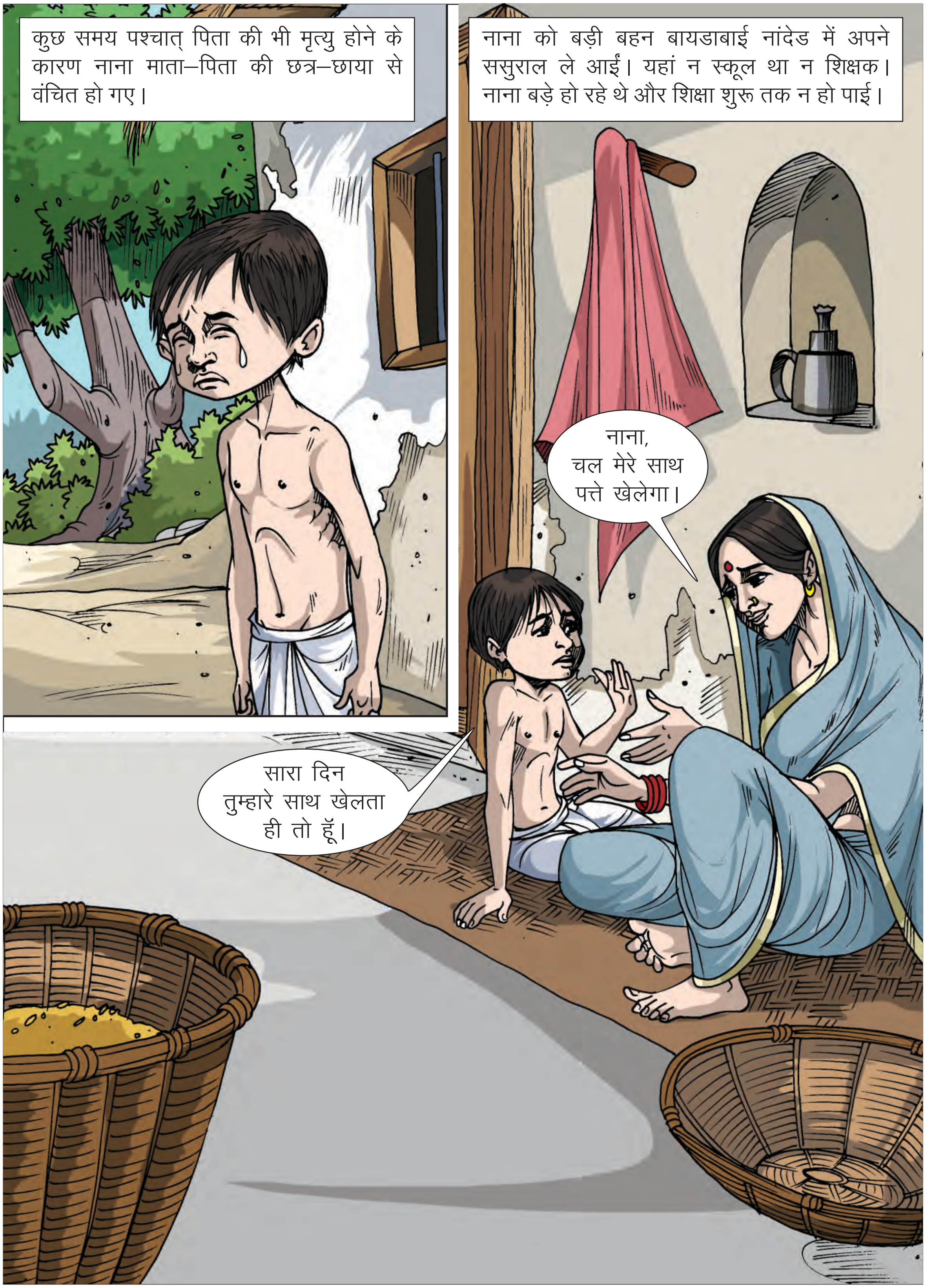
कुछ समय पश्चात् पिता की भी मृत्यु होने के कारण नाना माता–पिता की छत्र–छाया से वंचित हो गए।
नाना को बड़ी बहन बायडाबाई नांदेड में अपने ससुराल ले आईं। यहां न स्कूल था न शिक्षक। नाना बड़े हो रहे थे और शिक्षा शुरू तक न हो पाई।
नाना, चल मेरे साथ पत्ते खेलेगा।
सारा दिन तुम्हारे साथ खेलता ही तो हूँ।

दूसरी बडी बहन लक्ष्मीबाई के पति का स्थानांतरण रिसोड़ हुआ। वे एक प्राथमिक विद्यालय में अध्यापक थे।
मुझे नाना पर दया आती है। उसकी यह पढ़ाई की उमर है और वह सारा दिन खेलता रहता है। मैं इसे रिसोड ले जा रही हूं। वहीं इसका दाखिला कराऊंगी। उसे पढाऊंगी।
लक्ष्मीबाई के पति दत्तोपन्त घर पर भी नाना को पढ़ाते थे।
नाना कुशाग्र बुद्धि का है। आठवीं तक लगातार प्रथम आता रहा है। इसे आगे पढ़ने के लिए वाशिम भेजना चाहिए।

नियति उनके जीवन की दशा तय करने लगी। वाशिम में वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़ गए। उनमें राष्ट्र सेवा का भाव जाग चुका था।
डॉ. हेडगेवार वाशिम आए।
आज यहां 17 स्वयंसेवक संघ की प्रतिज्ञा लेंगे। नाना तुम्हारी प्रतिभा और राष्ट्र के प्रति समर्पण देखकर तुम्हें भी इनमें शामिल किया गया है।

अब प्रश्न था मैट्रिक की पढाई का। बाहर जाकर पढ़ने के लिए साधन नहीं थे। नाना पाठक परिवार के साथ रहते थे। पाठक परिवार भी मध्यम वर्गीय था। उसी परिवार के आबाजी और नानाजी ने एक योजना बनायी।

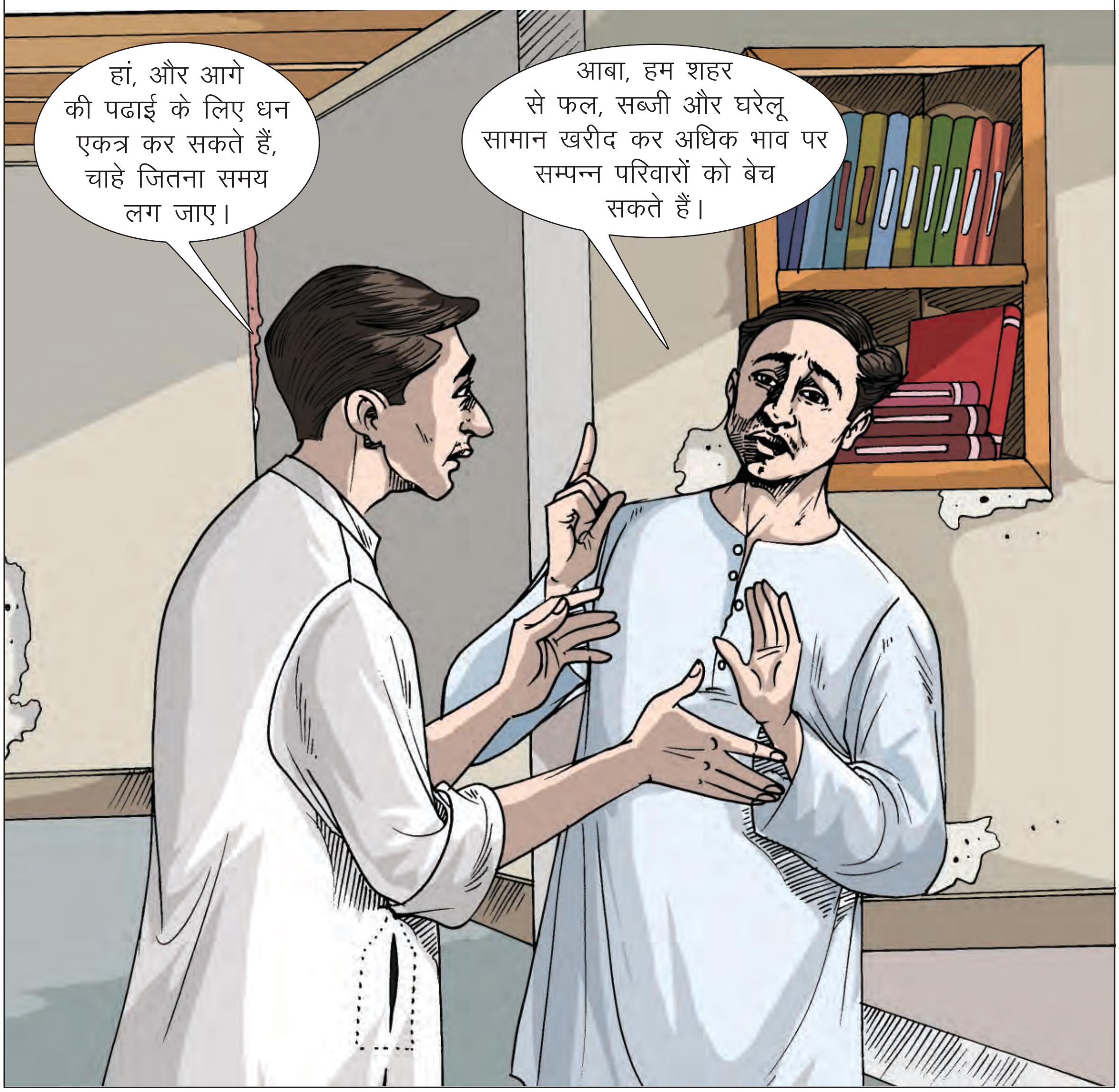
आबा, हम शहर से फल, सब्जी और घरेलू सामान खरीद कर अधिक भाव पर सम्पन्न परिवारों को बेच सकते हैं।
हां, और आगे की पढाई के लिए धन एकत्र कर सकते हैं, चाहे जितना समय लग जाए।

दो साल बाद नाना आबा सहित अन्य दो मित्रों के साथ राजस्थान के पिलानी बिडला कालेज पहुंच गए। नाना की जन्मजात प्रतिभा का प्रभाव यहां भी दिखने लगा। पढाई के साथ ही संघ कार्य की भी मन में ठानी थी। उसके लिए कडी मेहनत करने लगे। यहां कई रंगों में नजर आयी।
यह देखो 18 रूपए की जापानी साइकिल। अब इस पर घूम घूमकर संघ का कार्य करेंगे।
अरे नाना, सभी प्रतियोगिताओं में पुरस्कार पाकर तुमने धन एकत्र करने का क्या उपाय खोजा है।
भाई, चित्रकला हो या अभिनय, भाशण हो या कबड्डी। हर जगह नाना ही नाना।

नाना के नेतृत्व का गुण कालेज के संस्थापक सेठ घनश्यामदास बिरला की दृश्टि में आया। उन्होंने नाना को अपने पास बुलाया।
मैं तुम्हें अपने निजी सहायक के रूप में लेना चाहता हूं। भोजन–आवास की सुविधा के अतिरिक्त 80 रूपये का मासिक वेतन भी मिलेगा।

यद्यपि एक विद्यार्थी के लिए यह सुविधा एवं रकम बहुत बड़ी है, लेकिन मैं राश्ट्र सेवा में जीवन समर्पण का संकल्प ले चुका हूं।

1940 में वे नागपुर आए। यहां डा. हेडगेवार को बीमारी से जूझते पाया और अन्ततः खुद को उनकी चिता के सामने पाया।
मैं प्रण करता हूं कि अब से केवल राष्ट्र सेवा में मेरा पल–पल बीतेगा।

नाना संघ के पूर्णकालिक कार्यकर्ता बन गए। कॉलेज की पढाई छोड़कर आगरा पहुंच गए। यहां दीनदयाल जी के सहवास में संघ शाखाओं का विस्तार किया। यहां दीनदयाल जी के रूप में अच्छा सहयोग उन्हें मिल गया। दोनों ने मिलकर संघ कार्य का शाखाओं के माध्यम से विस्तार किया।
15 अगस्त 1940 को केवल 14 रूपये जेब में लेकर गोरखपुर के लिए रवाना हुए।
तीन दिन से अधिक किसी धर्मशाला में टिकने नहीं दिया जाता। सुना है यहां ज़मीदार परिवार के एडवोकेट बेटे अकेले ही रहते हैं। उनसे मिलता हूँ।

आपको खाना बनाने वाले की ज़रूरत है और मुझे घर की। यदि आप मुझे यहां रहने दें तो बड़ी कृपा होगी।
आप खुशी से रहिए।
उन्होंने संघ कार्य के लिए संपर्क योजना पर विचार किया।
डी.बी.इंटर कॉलेज खेल का मैदान।
एक हांकी का का प्रबंध करो, हम भी तुम्हारे साथ खेलना चाहते हैं।

हम एक टीम के रूप में देश सेवा के कार्यों में भी सफलता पा सकते हैं। मैं इस टीम को संघ की पहली शाखा के रूप में देखना चाहता हूँ।
प्रचारक जीवन कश्टप्रद था। कभी–कभी चने और पानी पीकर ही भूख मिटानी पड़ती थी। ऊलीनगर में उन्होंने एक पुरानी जर्जर और निर्जन कोठी को अपना निवास बनाया।

आजादी हमेशा ऊपर से नीचे की ओर आयी है। जब तक हमारे देश के गांव–गांव अशिक्षा, छुआ छूत और जाति पाति की भावना से ऊपर नहीं उठ पाते तब तक सभी देशवासी आजादी का अर्थ नहीं समझ सकते।

वे संघ अधिकारी भाउराव देवरस से मिले।
भारतीय संस्कारों के आधार पर शिशुओ की शिक्षा के प्रसार के लिए मैने शिशु मंदिर की स्थापना की योजना तैयार की है। यह देशभर में गैर सरकारी शिक्षा आंदोलन का रूप ले सकता है। आज देशभर में विद्याभारती शिक्षा ....

1942 में भारत छोड़ो आंदोलन के समय। गुरू पूर्णिमा का दिन। सैकड़ों स्वयंसेवक राश्ट्र प्रेम और वीर भाव से ओत प्रोत एक कॉलेज के प्रांगण में एकत्र थे। अंग्रेज एस.पी. मिस्टर टॉमस चिल्लाया।
भागो, यहां से, भागो यहां से।
नाना (टॉमस के कान में कुछ फुसफुसाए)

नाना अंग्रेज के सामने धैर्य और साहस की मूर्ति बने हुए हैं।

1948 में गांधी जी की हत्या के बाद सरकार ने आरोप लगाकर हजारों स्वयंसेवकों को गिरफ्तार किया। नाना भी जेल गए।

जेल में गार्ड के नेता मोइनुद्दीन से उनकी दोस्ती हुई। नेशनल कांग्रेस के नेता रफी अहमद किदवई मोइनुद्दीन से मिलने आते थे। वे भी नाना के मित्र बन गए। नाना अलग–अलग विचारधारा के लोगों को भी अपनी ओर आकर्शित कर लेते थे।

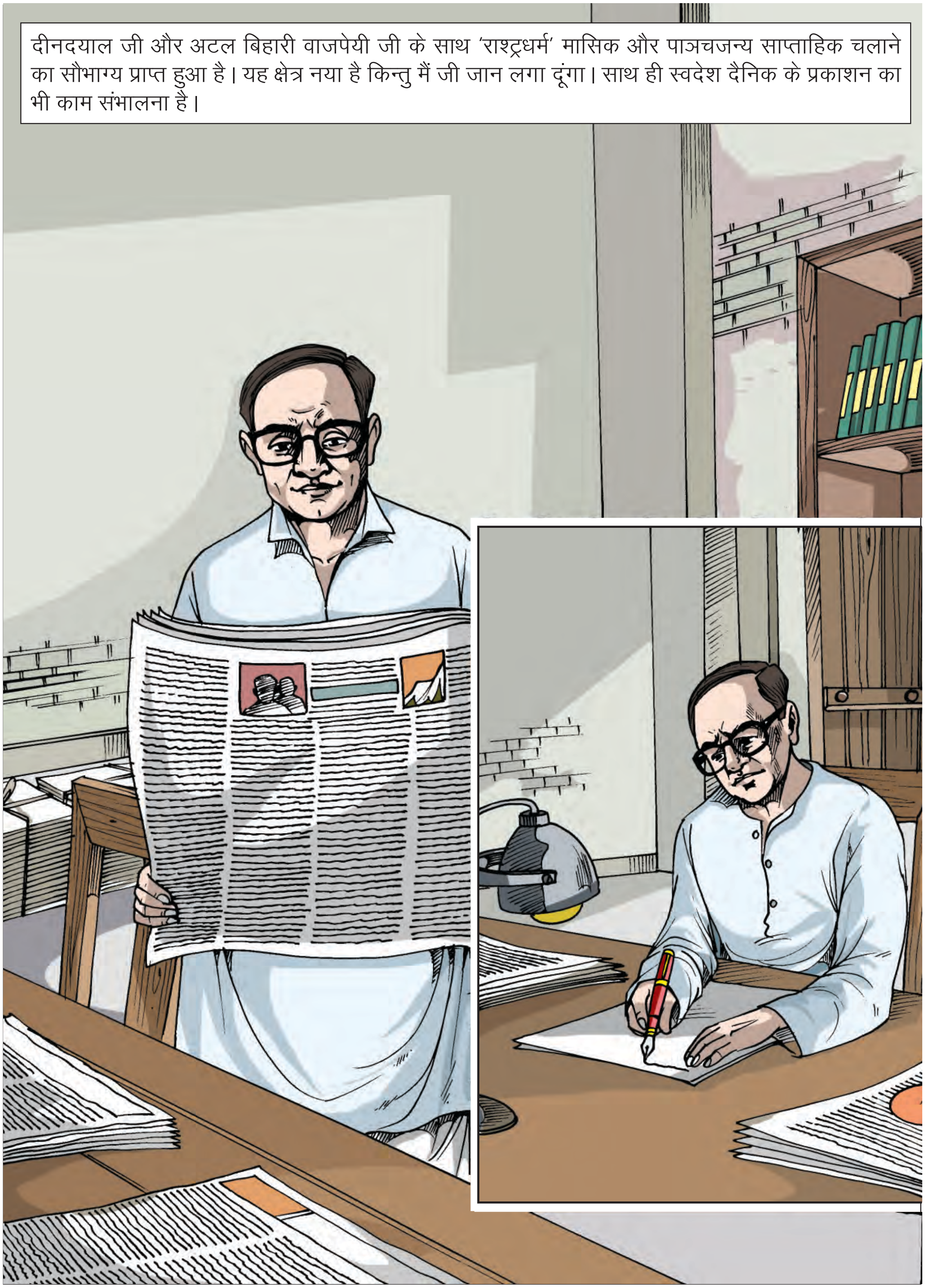
दीनदयाल जी और अटल बिहारी वाजपेयी जी के साथ 'राश्ट्रधर्म' मासिक और पाञ्चजन्य साप्ताहिक चलाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। यह क्षेत्र नया है किन्तु मैं जी जान लगा दूंगा। साथ ही स्वदेश दैनिक के प्रकाशन का भी काम संभालना है।

अब बिलकुल नया क्षेत्र उनका इंतजार कर रहा था। डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के साथ भारतीय राजनीति में पदार्पण। नानाजी को जनसंघ का संगठन खड़ा करने का दायित्व सौंपा गया। वे समाजवादी नेता राम मनोहर लोहिया से मिले।

1975 में लगे आपात्काल के दौरान नानाजी भूमिगत थे। और छिपकर आपात्काल के खिलाफ देशव्यापी आन्दोलन की व्यूह रचना कर रहे थे। उनको गिरफ्तार करने के लिए पुलिस लगी हुई थी।
नमस्ते।
ओह, आवाज से ही कोई आपको पहचान सकता है। वरना तो चालाक से चालाक गुप्तचर भी मात खा जाए।
हा हा, फुलपैंट, बुशर्शट, गंजापन, थोडे–थोडे बाल, हाथ में हैंड बैग किसी कम्पनी का सेक्रेटरी लग रहा हूं ना।
आपात्काल सीधे तरीके से खत्म नहीं होगा। हमको देशव्यापी उग्र क्रान्तिकारी आन्दोलन का ही वरन करना होगा। यह संदेश सभी तक पहुंचा दीजिए।

आपातकाल विरोधी आन्दोलन के नेता जयप्रकाश नारायण को भारी शारिरिक क्षति से उन्होंने बचाया। पटना में छात्र आन्दोलन को जयप्रकाश जी सम्बोधित कर रहे थे।
ओह सैनिक लाठियां बरसा रहे हैं। यह क्या नानाजी तो खुद लाठियां खाकर जे.पी. को बचा रहे हैं।

1977 में आपात काल हटा दिया गया। चुनावों की घोशणा हुई। नानाजी को बलरामपुर क्षेत्र से प्रत्याशी घोशित किया गया।
भाइयों और बहनों, मेरे खिलाफ कांग्रेस ने आपकी महारानी को उम्मीदवार बनाया है। क्या आप अपनी रानी को इंदिरा गांधी की दासी बनाना चाहते हैं।
नहीं–नहीं।
नहीं–नहीं।
नहीं–नहीं।
TAYAL

नानाजी भारी मतों से विजयी हुए। उन्हें मंत्रीपद देने की बात हुई पर उन्होंने प्रस्ताव ठुकरा दिया। उनका मन राजनीति से दूर ग्रामों के विकास की ओर खिंचा जा रहा था। इस बीच उन्होंने दीनदयाल शोध संस्थान की स्थापना की।
दीनदयाल जी को नियति के क्रूर हाथों ने हमसे छीन लिया लेकिन उनके अन्तोदय का सपना यह संस्थान पूरा करेगा।

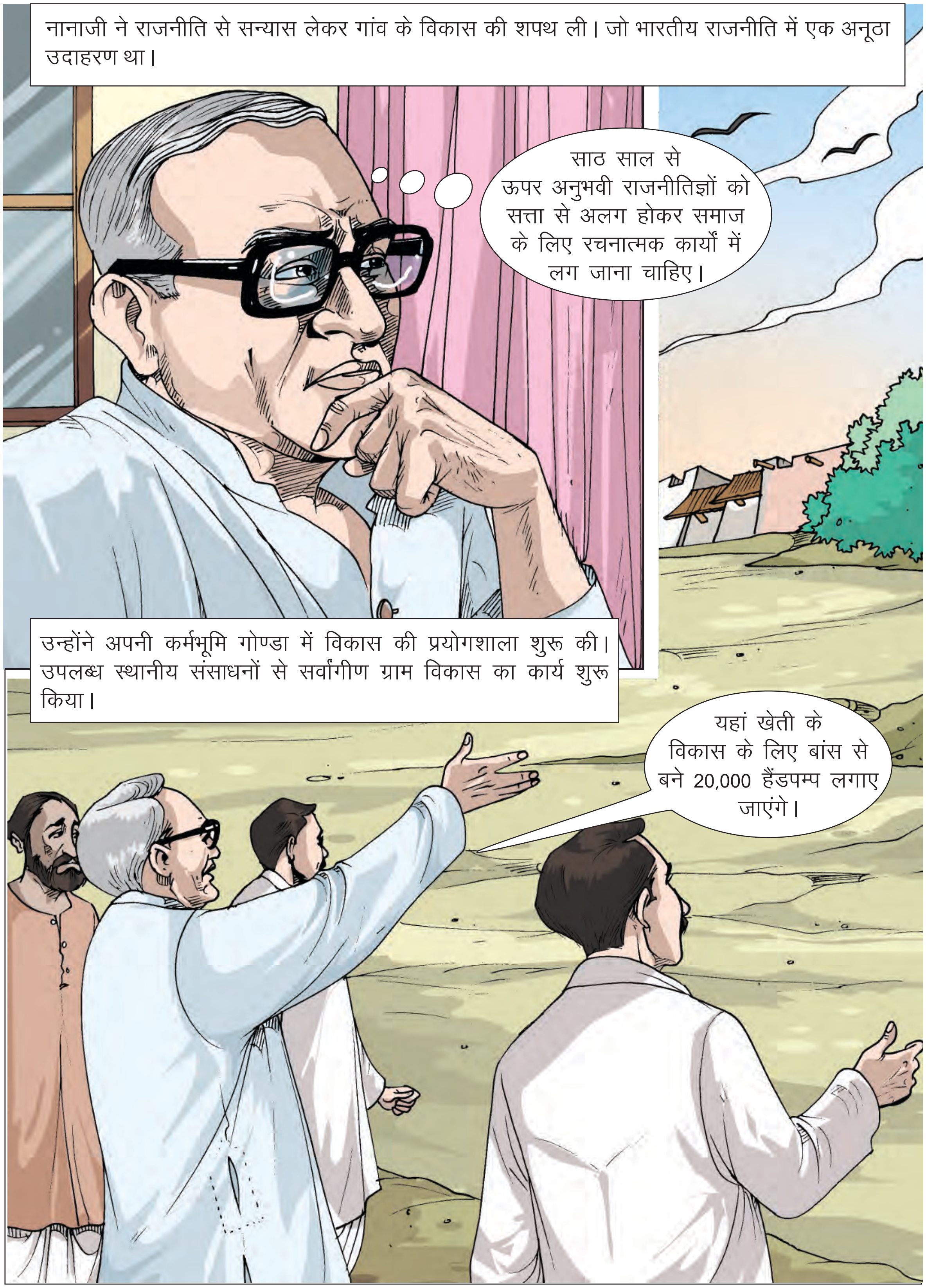
नानाजी ने राजनीति से सन्यास लेकर गांव के विकास की शपथ ली। जो भारतीय राजनीति में एक अनूठा उदाहरण था।
साठ साल से ऊपर अनुभवी राजनीतिज्ञों को सत्ता से अलग होकर समाज के लिए रचनात्मक कार्यों में लग जाना चाहिए।
उन्होंने अपनी कर्मभूमि गोण्डा में विकास की प्रयोगशाला शुरू की। उपलब्ध स्थानीय संसाधनों से सर्वांगीण ग्राम विकास का कार्य शुरू किया।
यहां खेती के विकास के लिए बांस से बने 20,000 हैंडपम्प लगाए जाएंगे।

भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति नीलम संजीव रेड्डी गोण्डा पहुंचे।

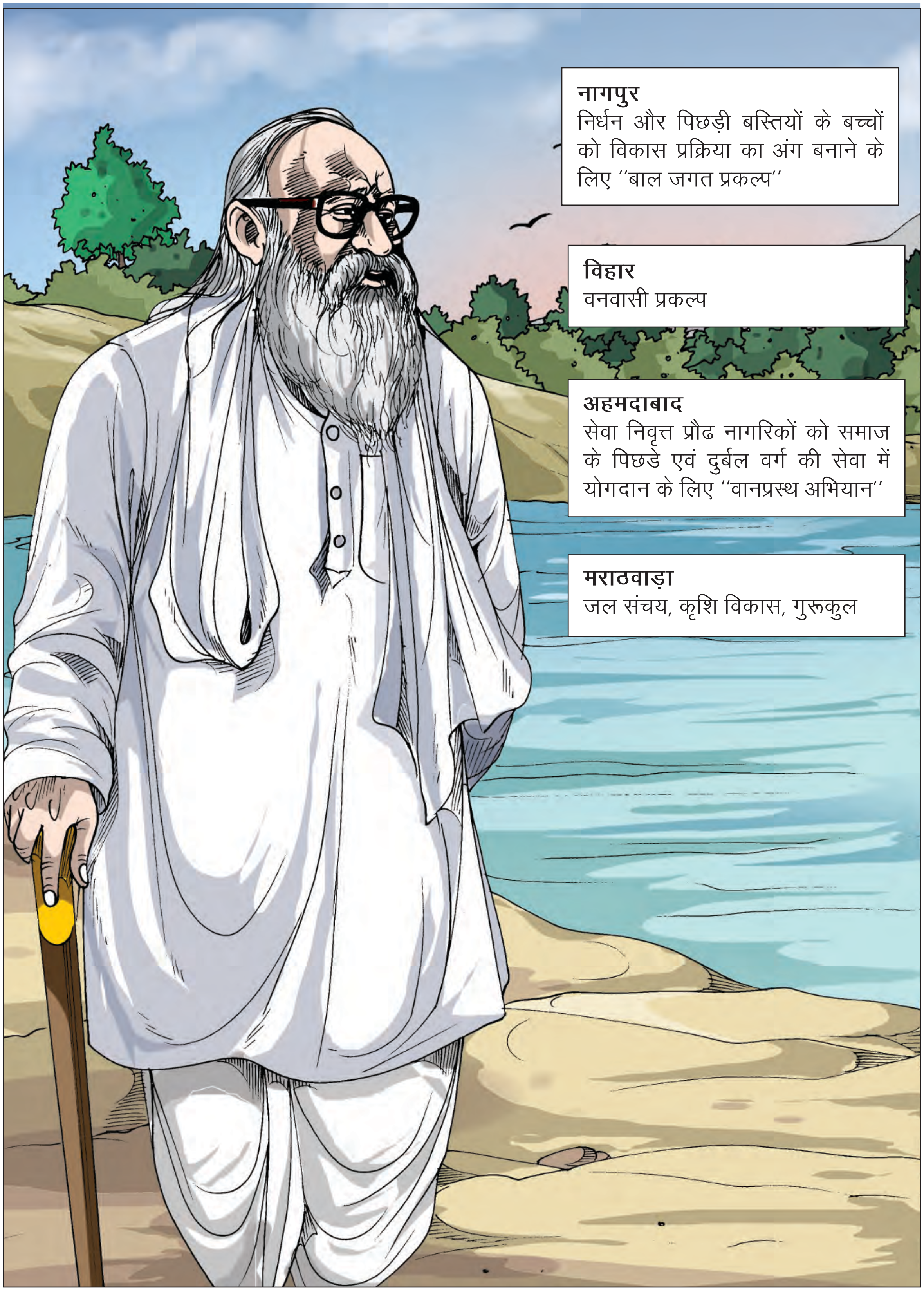
नागपुर
निर्धन और पिछड़ी बस्तियों के बच्चों को विकास प्रक्रिया का अंग बनाने के लिए ''बाल जगत प्रकल्प''
विहार
वनवासी प्रकल्प
अहमदाबाद
सेवा निवृत्त प्रौढ नागरिकों को समाज के पिछडे एवं दुर्बल वर्ग की सेवा में योगदान के लिए ''वानप्रस्थ अभियान''
मराठवाड़ा
जल संचय, कृषि विकास, गुरूकुल

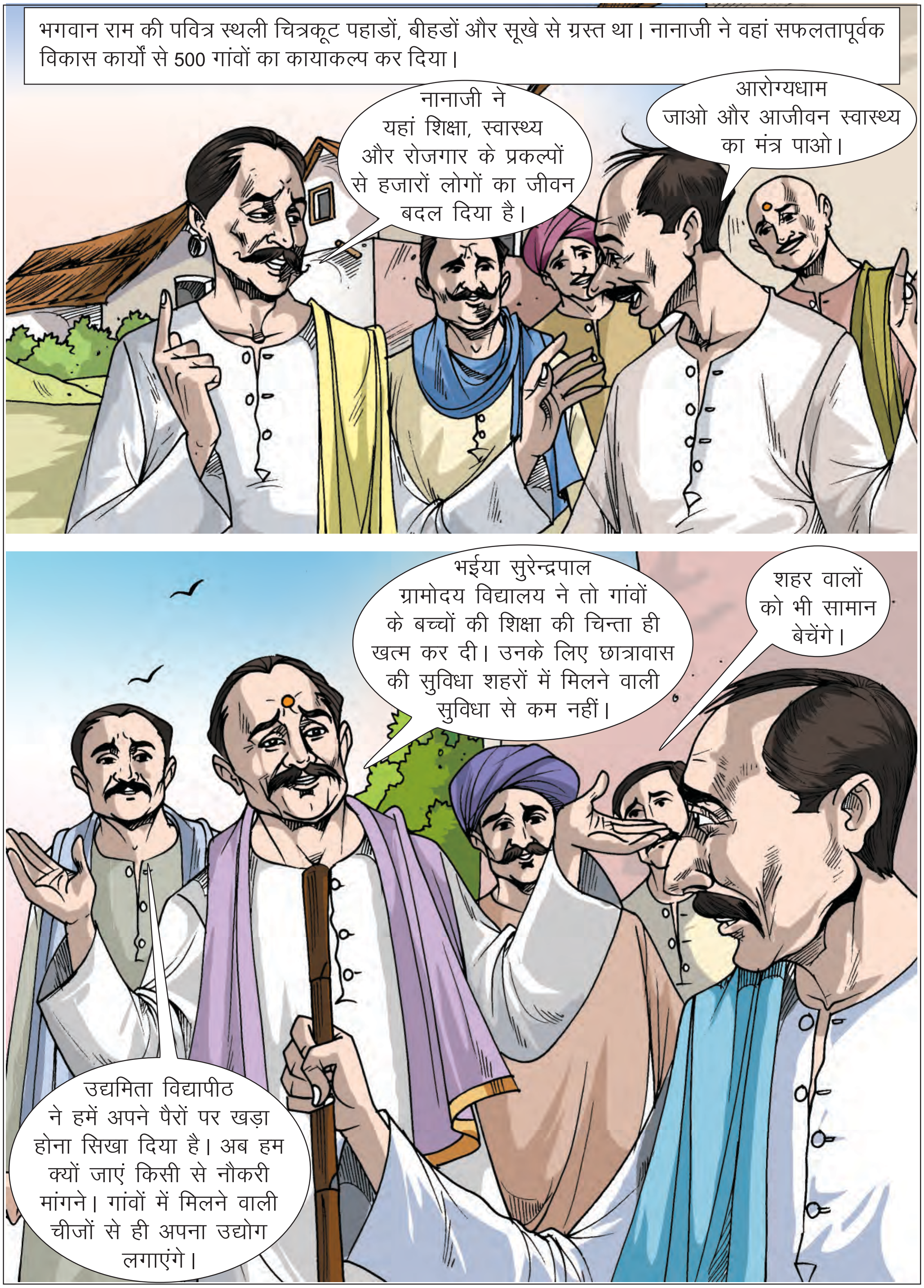
भगवान राम की पवित्र स्थली चित्रकूट पहाडों, बीहडों और सूखे से ग्रस्त था। नानाजी ने वहां सफलतापूर्वक विकास कार्यों से 500 गांवों का कायाकल्प कर दिया।
नानाजी ने यहां शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार के प्रकल्पों से हजारों लोगों का जीवन बदल दिया है।
आरोग्यधाम जाओ और आजीवन स्वास्थ्य का मंत्र पाओ।
भईया सुरेन्द्रपाल ग्रामोदय विद्यालय ने तो गांवों के बच्चों की शिक्षा की चिन्ता ही खत्म कर दी। उनके लिए छात्रावास की सुविधा शहरों में मिलने वाली सुविधा से कम नहीं।
शहर वालों को भी सामान बेचेंगे।
उद्यमिता विद्यापीठ ने हमें अपने पैरों पर खड़ा होना सिखा दिया है। अब हम क्यों जाएं किसी से नौकरी मांगने। गांवों में मिलने वाली चीजों से ही अपना उद्योग लगाएंगे।

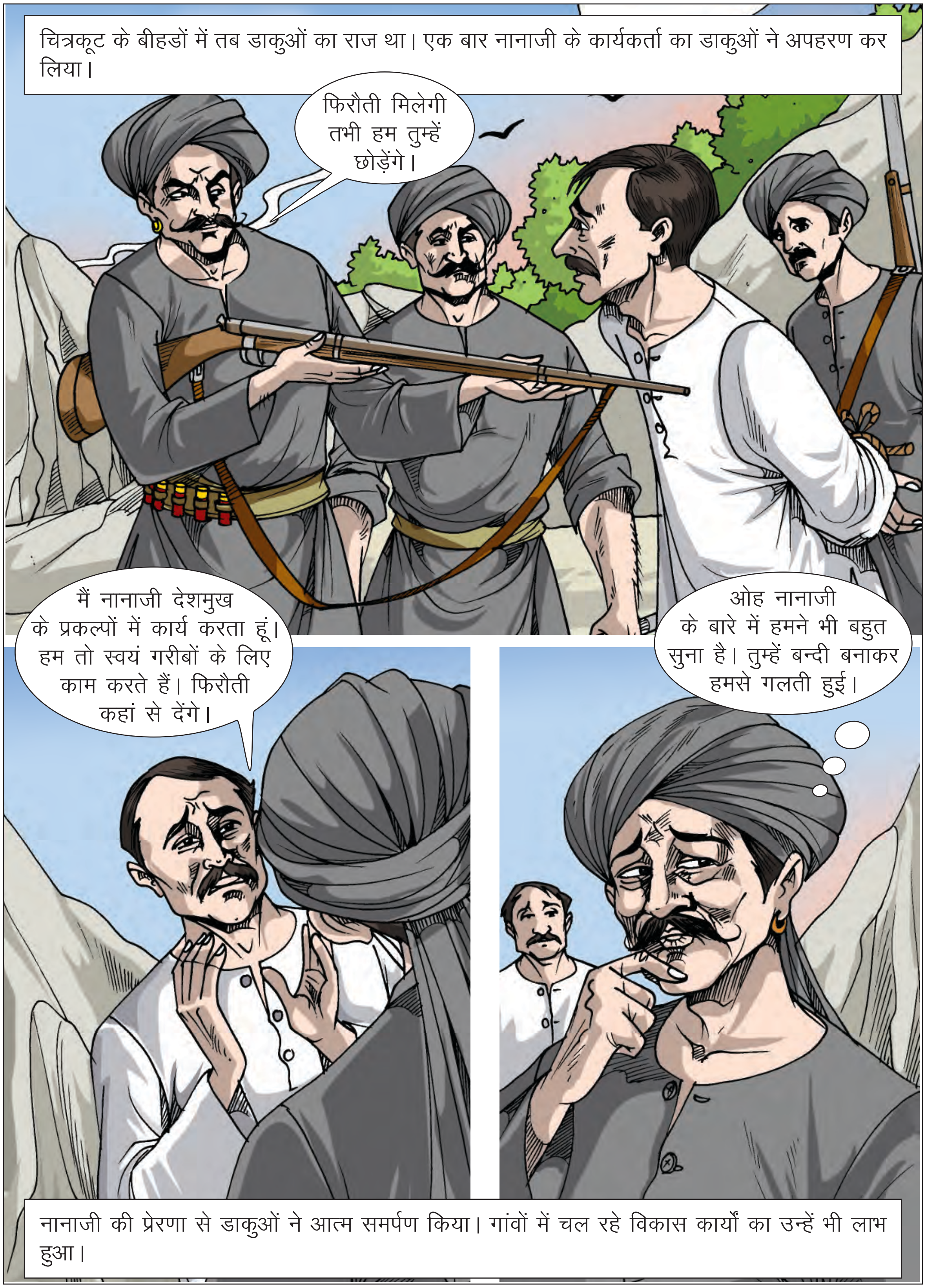
चित्रकूट के बीहडों में तब डाकुओं का राज था। एक बार नानाजी के कार्यकर्ता का डाकुओं ने अपहरण कर लिया।
फिरौती मिलेगी तभी हम तुम्हें छोड़ेंगे।
मैं नानाजी देशमुख के प्रकल्पों में कार्य करता हूं। हम तो स्वयं गरीबों के लिए काम करते हैं। फिरौती कहां से देंगे।
ओह नानाजी के बारे में हमने भी बहुत सुना है। तुम्हें बन्दी बनाकर हमसे गलती हुई।
नानाजी की प्रेरणा से डाकुओं ने आत्म समर्पण किया। गांवों में चल रहे विकास कार्यों का उन्हें भी लाभ हुआ।

तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी चित्रकूट पधारे।
भारत बदल रहा है, लेकिन जो लोग यह संदेह करते हैं कि देश आगे नहीं बढ़ रहा है, मैं उनसे कहूंगा, एक बार चित्रकूट जाकर देखें।
नानाजी को देश विदेश से सम्मान प्राप्त हुए। 1999 में उन्हें पद्म विभूशण से सम्मानित किया गया।

2005 में तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ0 अब्दुल कलाम चित्रकूट आए। उसके बाद डॉ0 कलाम जहां जाते चित्रकूट में चल रहे कामों की प्रशंसा करते।

नानाजी एक ऐसे समाज प्रेरक हैं, जिन्होंने देश के असंख्य दीन दुखियों के चेहरे पर मुस्कुराहट बिखेरने में सफलता पाई।

नानाजी युवाओं को देश के युगानुकूल विकास का उपकरण मानते थे। उन्होंने युवाओं के नाम पत्रों की श्रृंखला लिखी।

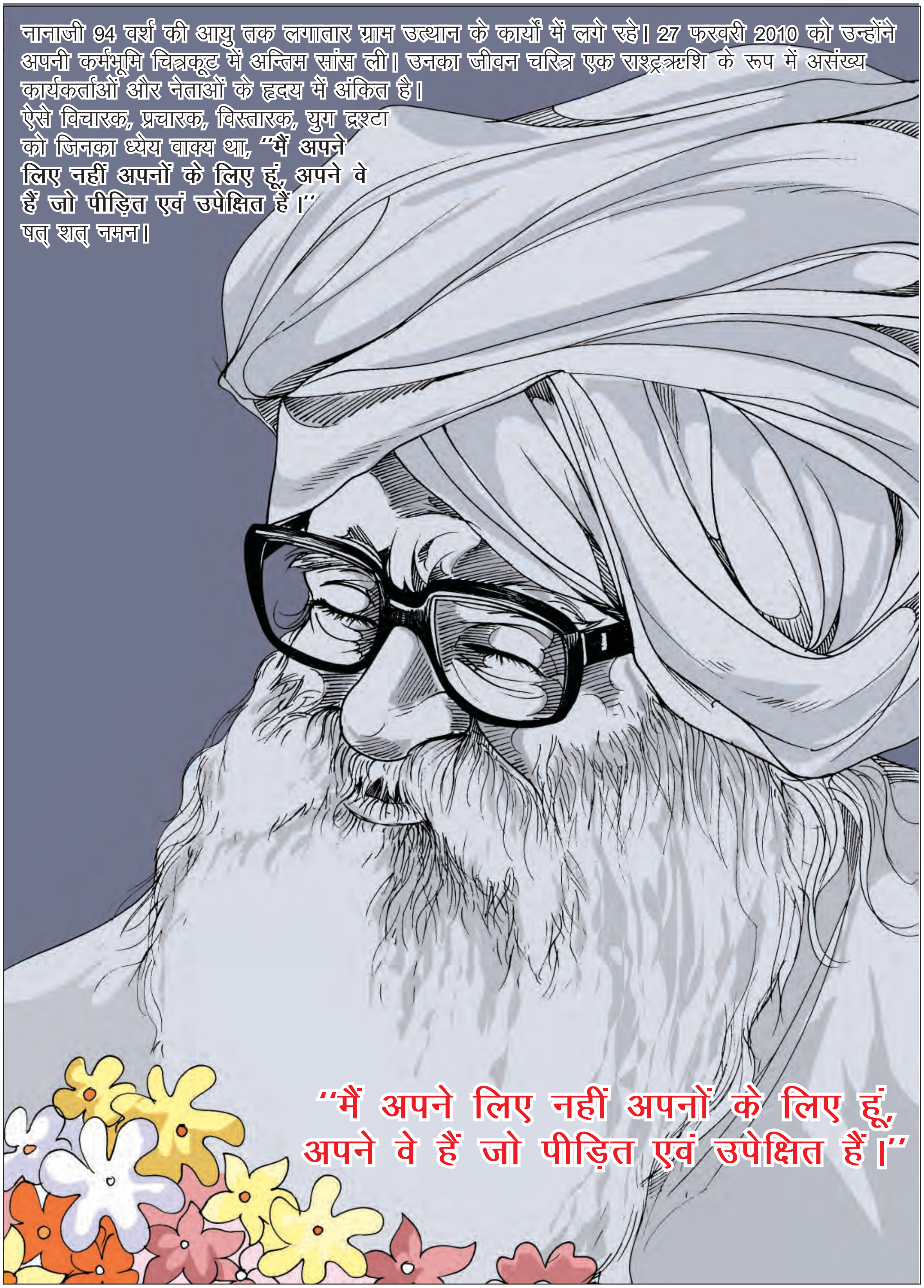
नानाजी 94 वर्श की आयु तक लगातार ग्राम उत्थान के कार्यों में लगे रहे। 27 फरवरी 2010 को उन्होंने अपनी कर्मभूमि चित्रकूट में अन्तिम सांस ली। उनका जीवन चरित्र एक राश्ट्रऋशि के रूप में असंख्य कार्यकर्ताओं और नेताओं के हृदय में अंकित है।
ऐसे विचारक, प्रचारक, विस्तारक, युग द्रश्टा को जिनका ध्येय वाक्य था, **"मैं अपने लिए नहीं अपनों के लिए हूं, अपने वे हैं जो पीड़ित एवं उपेक्षित हैं।"**
षत् शत् नमन।
"मैं अपने लिए नहीं अपनों के लिए हूं,
अपने वे हैं जो पीड़ित एवं उपेक्षित हैं।"

पं. दीनदयाल उपाध्याय का साहित्य

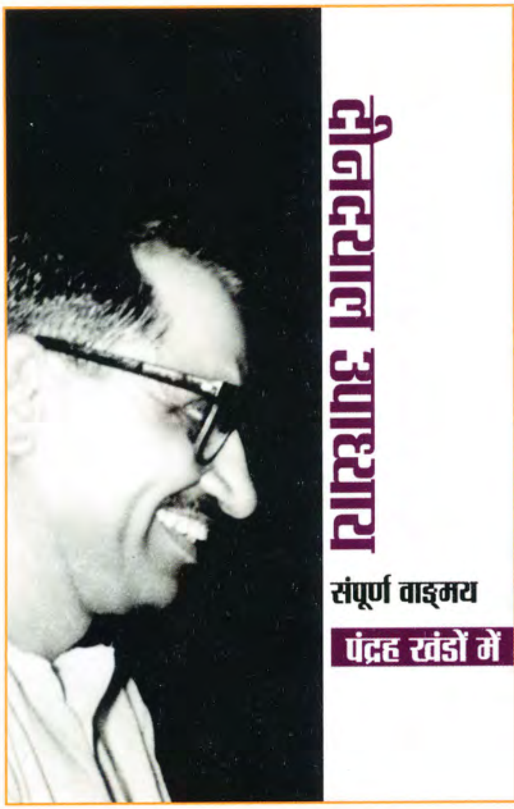

15
खंडों का सैट

डिमाई आकार के
5300 से अधिक पृष्ठ
दुर्लभ चित्रों के
80 रंगीन पृष्ठ

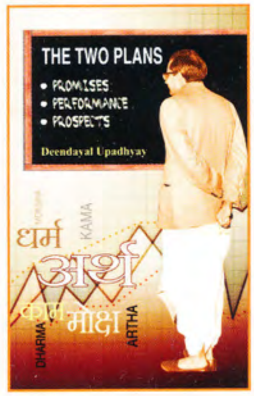

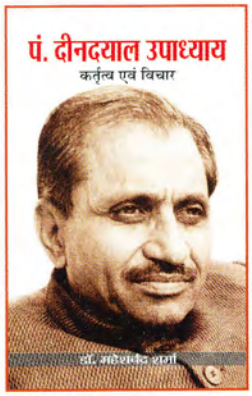

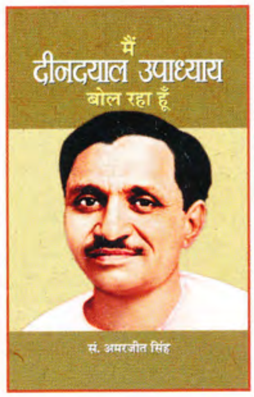

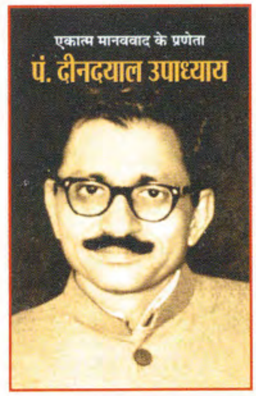

नानाजी देशमुख का साहित्य

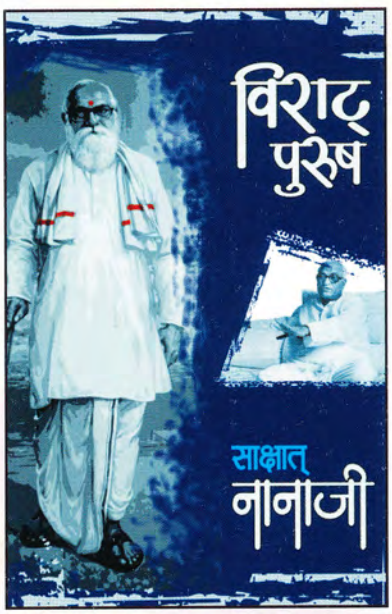

(6 खंडों का सैट)

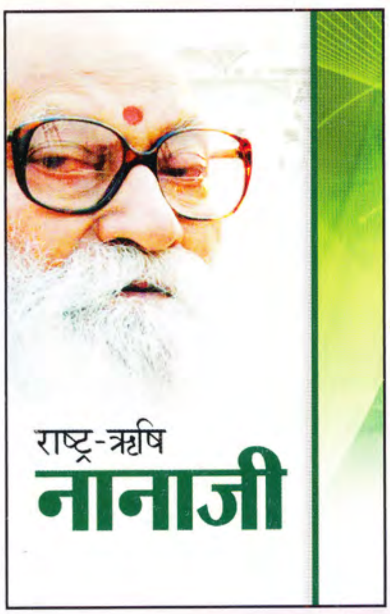

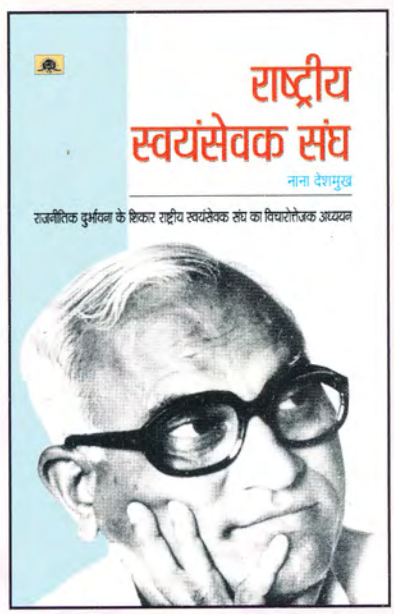

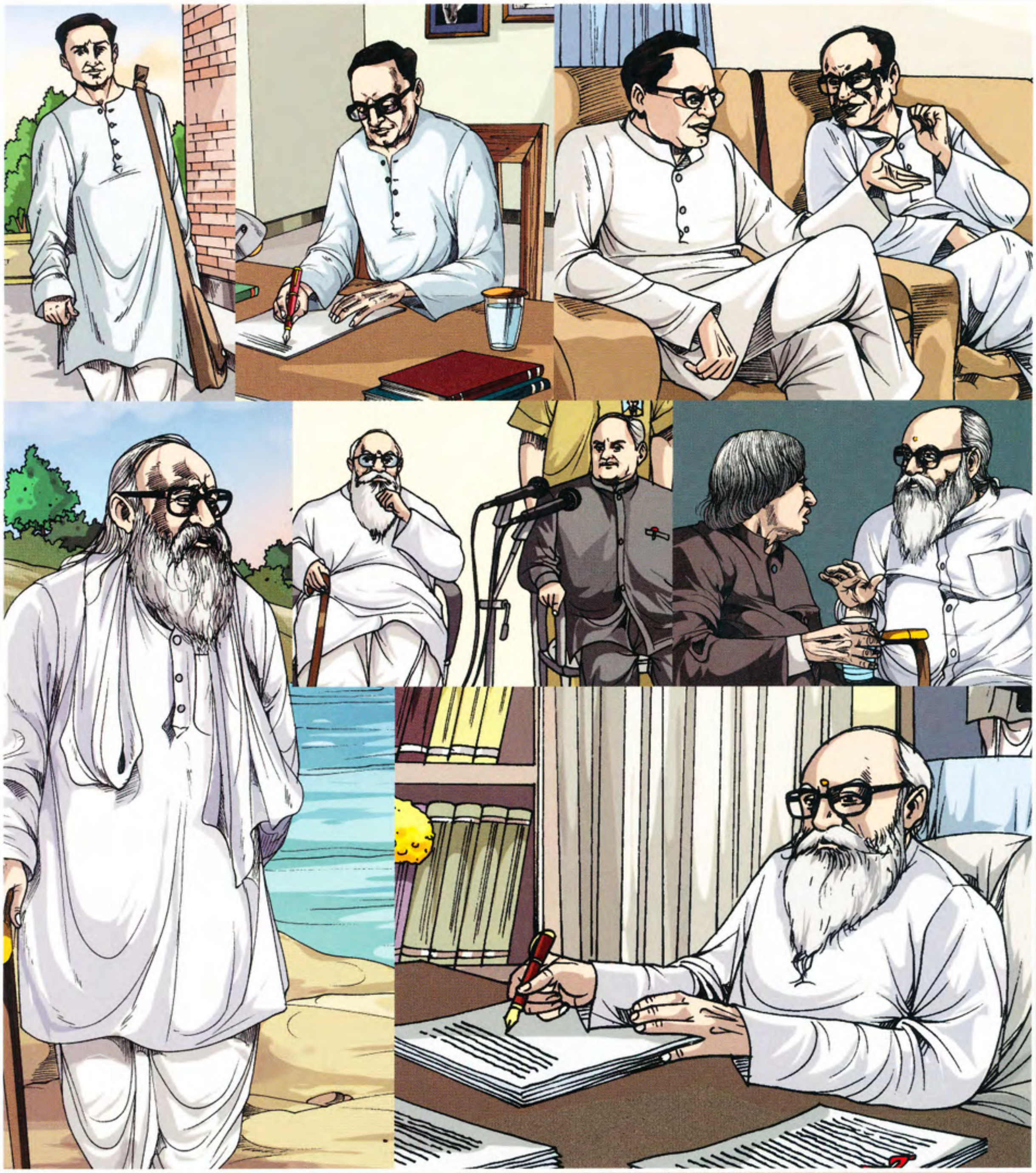

नानाजी देशमुख चित्रावली

प्रभात प्रकाशन

दीनदयाल शोध संस्थान

4/19 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

संस्करण : प्रथम, 2017 • चित्रांकन : संतोष मिश्रा • मुद्रक : ग्राफिक वर्ल्ड, नई दिल्ली

ISBN 978-93-86300-92-8

₹ 80/-

NANAJI DESHMUKH CHITRAWALI

Published by **PRABHAT PRAKASHAN**, 4/19 Asaf Ali Road, New Delhi-110002

DEENDAYAL RESEARCH INSTITUTE, Jhandewala Extn., New Delhi-110055

e-mail: prabhatbooks@gmail.com • ISBN 978-93-86300-92-8 • Price : Rs. Eighty only